Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

भारत के आर्थिक विकास मे महात्मा गाँधी के आदर्शवादी विचार

डॉ. उमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, विनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

Article Info
Volume 3 Issue 5
Page Number : 143-145
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 15 Oct 2020
Published : 26 Oct 2020

शोध सार- भारत में अंग्रेजी शासन से पूर्व भारतीय रहन–सहन शुद्ध रूप से प्राकृतिक परिवेश में होता रहा। परन्तु विलासिता की ओर उन्मुखता एवं अर्थव्यवस्था में मशीनीकरण को बढ़ावा ने भारतीय मूल को 'सर्वे भवन्तु सुखमय, सर्वे सन्तु निरामया' को कोसो दूर कर दिया। आजादी के की इस जर्जर अर्थव्यवस्था को विकास की पटरी पर लाने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जरा श्रम का प्रयोग, भूदान व्यवस्था तथा कुटीर उद्योग व्यवस्था इत्यादि चलायी गयी जो पुन: भारतीय संस्कृति को स्थापित करने का एक मूल माध्यम था। परन्तु विदेशी कम्पनियों आज इतनी हावी हो गयी है कि गाँधी जी का यह स्वप्न चूर–चूर नजर आने लगा है।

मुख्य शब्द - अर्थव्यवस्था, मनरेगा, सर्वोदय, महात्मा गाँधी, भारत।

भूमिका– अंग्रेज जब भारत को छोड़कर गये तब तक भारत की आर्थिक दशा खोखला बन गयी थी। जनता त्राहि त्राहि कर रही थी, खाने के लिए न भोजन, न रहने के लिए मकान तथा पहनने के लिए वस्त्र न था। दादा भाई नौरोजी ने इसी को ड्रेन थियरी नाम भी दिया, इस जर्जर आर्थिक से उबारने के लिए, सत्य अहिंसा के पुजारी एवं स्वतन्त्रता के अग्रदूत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपना अमूल्य आदर्शवादी विचारधारा प्रस्तुत किये। गाँधी जी के आर्थिक विचारों को अहिंसा का अर्थशास्त्र कहते हैं। अहिंसा का सिद्धान्त उनकी दर्शन का आत्मा है। गाँधी जी अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र में कोई भेद नहीं मानते थे, वे कहते थे कि, जो अर्थशास्त्र, नैतिक एवं भावात्मक मूल्यों की उपेक्षा करता है, वह एक मधुमक्खी के छत्ते के समान है, जिसमें जीवन रहते हुए भी सजीव जीवन का अभाव है। गाँधी जी ऐसे आर्थिक विकास को नहीं चाहते थे, जिसमें राष्ट्रीय जीवन के नैतिक पक्ष की अवहेलना हो। उनका विचार था कि जिन सामाजिक विज्ञानों के सम्बन्ध मनुष्य के दैनिक जीवन से है जैसे राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र उन्हें एक दूसरे से पृथक रखना न केवल असम्भव है बल्कि मूर्खता है। गाँधी जी केन्द्रित अर्थव्यवस्था के विरूद्ध थे।

गाँधी जी सादा जीवन एवं उच्च विचार के सबसे बड़े हिमायती थे। उनका मत था कि जीवन स्तर से पहले जीवन मात्र (standard of life) को महत्त्व दिया जाना चाहिए और जीवन के आदर्शों एवं मूल्यों का पालन करना चाहिए। वे आवश्यकताओं को न्यूनतम करना चाहते थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि भौतिक आवश्यकताओं को अनावश्यक रूप से बिना सोचे–विचारे सीमित कर देना चाहते थे। वरन् उनका अभिप्राय यह था कि मात्र भौतिक आवश्यकतायें ही मनुष्य का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, गाँधी जी के इस दृष्टिकोण का भारतीय अर्थशास्त्री प्रो0जे0के0 मेहता ने अनुसरण किया।

गाँधी जी के मशीनों सम्बन्धी विचारों में समय एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन हुए। गाँधी जी ने विचार व्यक्त किया कि प्रत्येक व्यक्ति को 8 घण्टा कार्य करना चाहिए, 8 घण्टा सोना चाहिए तथा 8 घण्टा फुरसत निकाल लेना चाहिए और इस फुरसत के समय में उसे सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करना चाहिए। ये बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के कट्टर विरोधी थे। प्रारम्भ में गाँधी जी ने मशीनों के प्रयोग का तीव्र विरोध किया एवं चरखे के प्रयोग पर बल दिया कि ग्रामीण क्षेत्र की महिला

Copyright : © the author(s), publisher and licensee This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License

सूत काटने का कार्य करेगी तो कुटीर उद्योग का विकास होगा तथा ये महिलायें अपना घरेलू खर्च का कार्य पूरा कर लेगी, यह कार्य पूरे देश में एक अभियान की तरह फैल गया। घर-घर चरखा के प्रयोग द्वारा सूत काटने लगे लोग और उस सूत को गाँधी जी के नाम पर खुले गांधी आश्रम की दुकान पर बेच देते थे। गाँधी जी 'हिन्द-स्वराज' में लिखते हैं कि मशीनें आज की सभ्यता की प्रतीक है जो पाप का प्रतिनिधित्व करती है।

गाँधी जी ने आधुनिक मशीनों के प्रयोग का विरोध किया परन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो हम पाते है कि उनकी आर्थिक व्यवस्था में मशीनों का स्थान है। उनका विचार था कि मशीनों के प्रयोग में कुछ बड़े लोग लाखों लोगों का शोषण करते है जिससे धन के केन्द्रीयकरण तथा उससे सम्बन्धित बुराइयों को प्रोत्साहन मिलता है। मशीनें हमें रोजगार बढ़ाने की सुविधा से वंचित कर देती है। मशीनों के प्रयोग से व्यक्ति आलसी हो जाता है।' गरीब देश के लिए मशीन फायदेमन्द नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि देश में जनसंख्या अधिक है तो घबराने की बात नहीं है, उन्हें काम पर लगाया जाय जिससे अधिक श्रमिकों की खपत हो जायेगी। गांधी जी धनी व्यक्तियों को शारीरिक श्रम करने पर जोर दिया। शारीरिक श्रम से व्यक्ति की आत्मा सन्तुष्ट रहती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीविका का अपने श्रम द्वारा ही उत्पन्न करना चाहिए। क्योंकि मिल में कार्य करने वाला प्रत्येक हाथ दस श्रमिकों के बराबर कार्य करता है। गाँधी जी उन मशीनों को स्वागत किया जिनके द्वारा झोपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों के बोझ को दूर किया जा सके। अत: गाँधी जी चरखे एवं खादी के द्वारा उन्होंने स्वदेशी वस्त्रों के साथ देश की अर्थव्यवस्था को भी ठीक करने में योगदान दिया।

पूँजीवादी दोषों को दूर करने के लिए गाँधी जी ने न्यासधारिता सम्बन्धी विचार दिया। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि समस्त निजी पूँजी एक ट्रस्ट के रूप में रखी जानी चाहिए और पूँजीपति को यह समझना चाहिए कि वह सम्पत्ति निजी लाभ के लिए नहीं है। वरन् समस्त समाज के लिए है इस सम्पत्ति में से न्यासधारी को केवल इतना ही लेने का अधिकार है जितना कि उसकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए और सम्मानित जीवन बिताने के लिए आवश्यक है। गाँधी जी इस मत को मानते थे कि वही सरकार सर्वोत्तम होती है जो न्यूनतम हस्तक्षेप करती है। अर्थात् यदि सरकार ही पूरा ध्यान दे तो व्यक्ति निष्क्रिय स्वभाव एवं आलसी प्रवृति के हो जायेंगे।

गाँधी जी देश के विकास में रचनात्मक कार्यों को भी बढ़ावा दिया अर्थात् महिलाओं में पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह और बहु-विवाह का विरोध किया, अनेक महिलाओं को विदेशी वस्त्रों को त्याग करने एवं जलाने तथा शराब की दुकानों पर धरना देने को प्रोत्साहन किया, विधवा विवाह और अन्तर्जातीय विवाह पर बल दिया, स्त्री शिक्षा पर बल दिया महिलाओं की शिक्षा के लिए जगह-जगह पर स्कूलों की व्यवस्था करवायी आज गाँधी जी की पत्नी के नाम पर प्रत्येक ब्लाक पर कस्तूरबा गाँधी स्कूल खोल दिये गये, पढ़ाई में सूत-कताई की परीक्षा सभी को पास करना अनिवार्य था। गरीबी निवारण के लिए भी गाँधी जी बड़े स्तर पर बढ़-चढ़ कर भाग लिया जिसके सन्दर्भ में कांग्रेस सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दूर करने के लिए गाँधी जी के नाम सहित शब्दों से मनरेगा योजनाचालू कर दी, अत: ये सब गाँधी जी के दिये गये विचारों की बढ़-चढ़ कर नयी सोच है। गाँधी जी देश के उत्थान के लिए जनता का सहयोग मांगे और कहें कि यदि सहयोग नहीं करेंगे तो मरे अर्थात् करो या मरो के नारा से सम्बोधित किये।

गाँधी जी ने वैदिक कालीन उस वर्णव्यवस्था को महत्व दिया जिसके अनुसार व्यवसाय के आधार पर श्रम विभाजन होता है। वे जन्म के आधार पर श्रम विभाजन के विरोधी थे और कार्य के अनुसार श्रम विभाजन के समर्थक थे। उनका विचार था कि वर्ण व्यवस्था से प्रत्येक व्यक्ति का लाभ होता है। क्योंकि वह किसी भी व्यवसाय का उत्तम ज्ञान अपने पूर्वजों से प्राप्त कर सकता है और उसे कुशलता के साथ कर सकता है। वे सोचते थे कि मनुष्य सामाजिक कल्याण की दृष्टि से किसी भी व्यवसाय को अपना सकता है और देश के आर्थिक विकास में सहयोग कर सकता है। गाँधी जी के आदर्शवादी विचारों का

एक और यह भी निष्कर्ष निकला है कि जिस समाज में लोग मुश्किल से अपना जीवन निर्वाह कर पाते हैं और उनकी क्रय शक्ति भोजन तथा आवश्यक आवश्यकताओं के लिए भी पर्याप्त नहीं हो पाती, वहाँ मुद्रा का प्रयोग कुछ अंशों में क्रय शक्ति को विलासिता की ओर प्रवाहित कर देगी जिसके कारण वह वास्तविक सम्पत्ति सीमित हो जायेगी।

ग्रामीण सर्वोदय गाँवों का उत्थान करना गाँधी जी का एक पृथक विचार था। अर्थात् ग्रामीण सर्वोदय गाँधी जी का महान आदर्श था। उनका कहना था कि समाज का सम्पूर्ण ढाँचा अहिंसा पर आधारित है। गाँवों में कृषि, विकेन्द्रित उद्योग, छोटे स्तर पर सहकारी संगठन स्थापित किये जाय जिसमें सभी लोग भाग भी ले। आदर्श ग्राम वह हो जहाँ पर निम्न सुविधायें अवश्य हो (1) शुद्ध पेयजल (2) चिकित्सालय सुविधायें (3) सिंचाई (4) धर्मशाला (5) पेड़-पौधे (6) सफाई स्वच्छता तथा पूजा घर (7) ग्राम पंचायत आदि।

मद्य निषेध सादा जीवन उच्च विचार के पुजारी महात्मा गाँधी जी चाय, काफी, तम्बाकू तथा अफीम आदि के उपभोग के कट्टर विरोधी थे।

निष्कर्ष - जर्जर-जर्जर भारतीय अर्थव्यवस्था को महात्मा गाँधी जी सभी वर्गों के कल्याण को देखते हुए यही भाव की सबका उत्थान हो, कोई भूखे न सोये, विकास की इस थारा को पटरी पर लाने में अहिंसात्मक एवं जीवन भर सराहनीय विचार देकर अमर हो गये तथा विकास के लिए उनकी स्मृति में सरकार विभिन्न योजनाओं को मूर्तरूप दे रही है।

सन्दर्भ सूची

1. आर्थिक विचारों का इतिहास, संस्करण 1997, पृ0 520.
2. सिन्हा, वी0सी0 आर्थिक विचारों का इतिहास, पृ0481.
3. हजेला, टी0एन0, आर्थिक विचारों का इतिहास, टी0एन0 हजेला, पृ0 521.
4. आधुनिक भारत NCERT, पृ0168.
5. आधुनिक भारत NCERT, 90 173.
6. चन्द्रा, विपिन, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, पृ0447.
7. आर्थिक विचारों का इतिहास, पृ0 523.
8. चन्द्रा, विपिन, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, विपिन चन्द्रा, पृ0441.
9. हजेला, टी0एन0, आर्थिक विचारों का इतिहास, पृ0523.